डॉ. पद्मा पाटील
एम.ए. पी.एच.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करती हूँ कि, दिपाली मधुकर अनाजेकरद्वारा लिखित, "मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रितिबिंबित नारी—जीवन" लघु शोध—प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान :— कोल्हापुर

तिथि :— 30/05/2009

(डॉ. पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. सुलोचना न. अंतरेड्डी
एम.ए. पी.एच.डी.
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग
डी.आर.माने महाविद्यालय
कागल।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि कु. दिपाली मधुकर अनाजेकरने मेरे शोध, निर्देशन में "मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी जीवन" यह लघुशोध प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिन्दी) उपाधि के हेतु सफलतापूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक शोधकार्य है। जो तथ्य इस लघु शोध–प्रबंध में प्रस्तुत किए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। यह शोधकार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नही किया गया है। शोध–छात्रा के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी–तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

शोध निर्देशिक

स्थान – कोल्हापुर

तिथि – 29/05/09

(डॉ. सुलोचना न. अंतरेड्डी)

[redacted]

प्रख्यापन

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासो में प्रतिबिंबित नारी जीवन" यह लघु शोध प्रबंध मेरा मौलिक शोधकार्य है, जो एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह शोधकार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधछात्रा,

DAnajekar.

स्थान – कोल्हापुर

तिथि – 29/05/09

(कु. दिपाली मधुकर अनाजेकर)

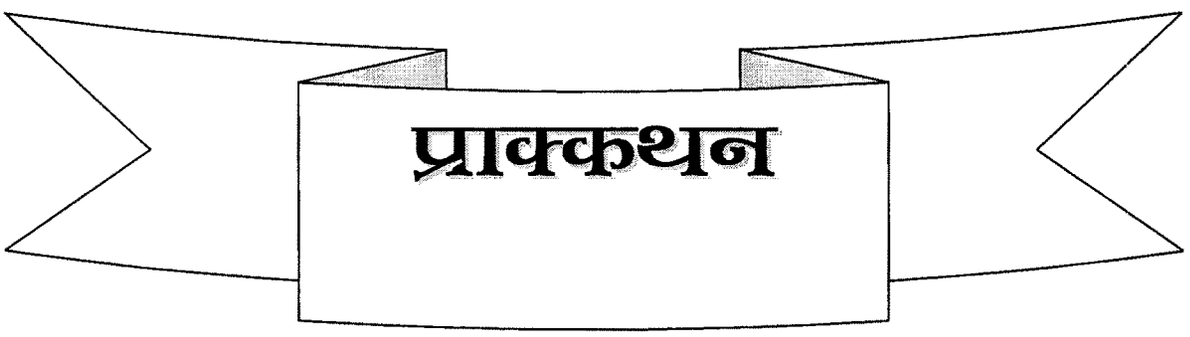

प्राक्कथन

प्राक्कथन

❖प्रेरणा एवं विषय — चयन

स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद मुझे एम फील करने की इच्छा प्रकट हुई। यह भी सच है कि हिंदी साहित्य विधा में उपन्यास विधा मेरी रूचि का विषय रहा है। एम्. ए. अध्ययन के दौरान मुझे प्रेमचंद के 'गोदान' तथा 'गबन', अज्ञेय का अपने–अपने अजनबी, राजेंद्र यादव का 'शह और मात', मैत्रेयी पुष्पा का 'विज़न' जैसे उपन्यासों को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

एम.फिल. प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात सौभाग्य से शोध–निर्देशिका के रूप में श्रद्धेय गुरूवर्या डॉ. सुलोचना अंतरेड्डींजी का प्राप्त होना मेरे लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। शोध चयन के संदर्भ में आपसे विचार–विमर्श करने पर आपने मुझे मैत्रेयी पुष्पाजी के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास पढ़ने का सुझाव दिया। इन दो उपन्यासों में प्रमुखता से नारी–जीवन के विविध पक्ष को चित्रित किया है। इन रचनाओं में चित्रित नारी के दर्द, पीड़ा और संघर्ष तथा विद्रोह का स्वाभाविक चित्रण प्रभावकारी रहा है। एक नारी की पीड़ा, दर्द दुसरी नारी ही समझ सकती है इसलिए मैंने महिला उपन्यासकार के नारी जीवन को अपने शोधकार्य का विषय बनाने की बात ठान ली। मैत्रेयीजी के रचनाओं के अध्ययन के उपरांत गुरूवर्य डॉ. अंतररेड्डीजी

से चर्चा की अंतत: आपकी अनुमति और स्वीकृती के पश्चात मे प्रस्तुत विषय का चयन कर लघु शोध प्रबंध पूरा करने का विनम्र प्रयास किया है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में उभरकर आयीं महिला रचनाकारो में मैत्रेयी पुष्पाजी का नाम अग्रणी है। मैत्रेयीजी हिंदी साहित्य में अलग पहचान बनानेवाली नयी पिढ़ी की सर्वाधिक चर्चित, प्रतिभाशाली महिला कथाकार है। उन्होंने नारी—लेखन के सीमित दायरों को तोड़कर उसे व्यापक बनाने का प्रयास किया है।

"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन" इस विषय को लेकर आज तक अध्ययन नहीं हुआ है, उस कमी की पूर्ति के उद्देश से यह विषय लेकर प्रस्तुत लघु शोध—प्रबंध की रचना की गई है।

प्रस्तुत विषय को लेकर अनुसंधान के आरंभ में मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए वे इसप्रकार है —

१. मैत्रेयी पुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व किस प्रकार रहा है?

२. विवेच्य उपन्यासों में नारी के कौनसे रूपों का चित्रण हुआ है?

३. मैत्रेयीजी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर क्या प्रभाव है?

४. मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में नारी की कौनसी समस्याओं का चित्रण हुआ है?

इन सभी प्रश्नों के प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघु शोध–निबंध के उपसंहार में दिए गए है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध – प्रबंध को पॉच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन किया है।

- **प्रथम अध्याय :– 'मैत्रेयी पुष्पा के व्यक्तित्व और साहित्य का परिचय**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैत्रेयी पुष्पाजी के व्यक्तित्व और साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। इनमें उनकी जन्म–तिथी, जन्मस्थान, माता–पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, विवाह आदि का संक्षिप्त विवेचन किया है। व्यक्तित्व में उनके विविध पहलुओं को विशेषताओं को अंकित किया है। साहित्य के अंतर्गत उनके उपन्यास कहानी, आत्मकथा, के नाम तथा प्रकाशन वर्ष का संक्षिप्त विवरण दिया है। उन्हें प्राप्त पुरस्कारों का विवरण किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष लिखे है।'

- **द्वितीय अध्याय :–"मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों का विषयगत विवेचन।"**

प्रस्तुत अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष लिखे है।

- तृतीय अध्याय :— "मैत्रेयी पुष्पाजी के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास के नारी—पात्र :

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यासो के नारी—पात्रो के विविध रूपो का चित्रण किया है। नारी पात्रो के विविध रूपों के अंतर्गत ग्रामीण नारी, विद्रोही नारी आधुनिक नारी, परंपरागत नारी, अनपढ़ नारी, नारीपात्रो के रूप में विवेचन किया है।"

- चतुर्थ अध्याय :— "मैत्रेयी पुष्पाजी के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास में प्रतिबिंबित नारी के रूप।"

प्रस्तुति अध्याय के अंतर्गत नारी विविध रूपो का रिश्तों के आधारपर विस्तृत विवेचन किया है। जिसमें माता, बेटी, पत्नी, सास, बहू, बहन, भाभी आदि। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष है।

- पंचम अध्याय :— "मैत्रेयी पुष्पाजी के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यास प्रतिबिंबित नारी—विमर्श।"

प्रस्तुत अध्याय में नारी—विमर्श का चित्रण हुआ है। जिसमें नारी का वैधव्य जीवन विधवा नारी का शोषण, नारी के सामाजिक हिंसा, व्यभिचार, नारी —हत्या, भ्रूण हत्या, नारी—दमन, नारी का परिवार में शोषण, अनमेल विवाह, नारी की अस्मिता, आत्मनिर्भरता, नारी—चेतना,

नारी का समान अधिकार आदि का चित्रण किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए है।

❖ उपसंहार

अंत में 'उपसंहार' में विवेच्य अध्यायों में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किए है। साथ ही प्राप्त उपलब्धियों आधार ग्रंथ सूची तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

❖शोध कार्य की मौलिकता:—

१. प्रस्तुत लघु शोधप्रबधं 'मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' और 'अगनपाखी' उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी—जीवन विषय पर लिखा गया हिंदी अनुसंधान क्षेत्र का पहला लघु—शोध—प्रबंध है।'

२. प्रस्तुत लघु शोध—प्रबंध में 'मैत्रेयीजी के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं साहित्यिक रचना का समग्र लेखा—जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है।'

३. मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में कथावस्तु की मौलिकता दिखाई देती है।

४. मैत्रेयीजीने विवेच्य उपन्यासों में नारी—पात्रों का गहराई से अध्ययन करके नारी के प्रत्येक पक्ष को चित्रित किया गया है।

५. मैत्रेयीजी के विवेच्य उपन्यासों में नारी एक ओर अपमानित, उपेक्षित दिखाई देती है तो दूसरी ओर विद्रोही, क्रांतिकारी, लड़ाऊ वृत्ति रखनेवाली, संघर्षरत वर्णित है।

❖संदभ्र ग्रंथ सूची :—

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

शब्द कोश

पत्र—पत्रिकाएँ

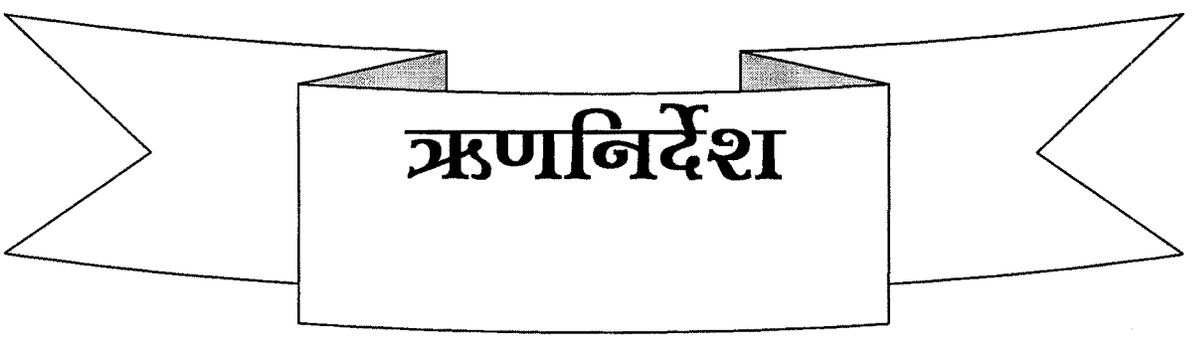
ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

- शोध कार्य की मौलिकता :—

प्रस्तुत लघु कार्य को संपन्न बनाने में जिन ज्ञात—अज्ञात देवियों और विद्वानों तथा आत्मीयजनों ने सहायता की है उनके प्रति 'ऋण—निर्देश' प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानती हूँ।

मैं सर्वपथम आदरणीय गुरूवर्या सुलोचना नरसिंगराव अंतररेड्डी के प्रति कृतज्ञ हूँ। उनके विद्वतपूर्ण और कुशल मार्गदर्शन का ही यह फल है। मुझे आपसे हमेशा प्रेम, परामर्श, प्रेरणा तथा उचित निर्देशन मिलता रहा। काफी कार्य—व्यस्तता के बावजूद भी आपने मेरे लिए समय—समय पर अमूल्य दिशा — निर्देशन किया। आप जैसे श्रद्धेय गुरूवर्या को शब्दों के फुलों में बॉधना मेरे लिए असंभव है। फिर भी मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। आपका यह आत्मियतापूर्ण स्वभाव मुझे जीवनभर याद रहेगा। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि भविष्य में आपका स्नेह आशीर्वाद और आपकी अमिट छाया मुझ पर हमेशा बनी रहे।

हिंदी विभाग अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ. पद्मा पाटील के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ कि उन्होंने भी कार्यव्यस्तता के बावजुद मुझे प्रेरणा दी एवं सहायता की। हिंदी विभाग के गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाणजीने मुझे समय समय पर बहुमुल्य मार्गदर्शन किया। मैं शतशः उनका आभार मानती हूँ। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल, माथेकर सर, दिंडे सर उनका आभार मानती हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के अनिल साळोंखे, हिंदी विभाग के

वरिष्ठ लिपिक डॉ. मंगेश कोळेकर और सहायक श्री अवघडे मामाजी का मै आभार मानती हूँ।

इस शोध कार्य में मेरी तीन महीने की नन्हीं प्यारी बेटी 'आर्या' ने मुझे घर से ग्रंथालय में आने के लिए, पढ़ाई के लिए इतना बड़ा अवसर दिया कि मैं उसका आभार शब्दों में बयान नहीं कर सकती। उसके सहयो गसे मेरा कार्य पूरा हुआ है। मैं तहे दिल से उसका शुक्रीयादा करती हूँ।

मेरी माताजी (मम्मी) सौ. अंजनीजी और पिताजी (बापू) डॉ. श्री मधुकर तुकाराम अनाजेकर के आशीर्वाद से मेरा शोधकार्य संपन्न हुआ है। उन दानों के साथ मेरे बडे भाई डॉ. श्री. शशिकांत मधुकर अनाजेकरजीने (भैय्या) मुझे बडी सहायता की। मम्मी, बापू और भैय्या इन तीनों ने बड़े लाड़ — प्यार से बेटी की देखभाल की। मैं आजन्म सभी की ऋणी रहूँगी। साथ ही मेरी बड़ी बहन सौ. अनुराधा, छोटी बहन सौ. तेजस्वि और बहनोई श्री. आकाश गालिंदे आरटीओ अधिकारी की प्रेरणा के प्रति अपना आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

मेरे पति श्री. राहुल उद्धवराव पलंगेजी उनका शुक्रिया मैं किन शब्दों में करू? क्योंकि उनके अनुमति और सहयोग के बिना मैं अपना शोध कार्य पूरा नहीं कर सकती थी। उनकी मैं हमेशा ऋणी रहूँगी। मेरी सास लक्ष्मीबाई तथा देवर अतुलजी का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा है।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, न्यु कॉलेज कोल्हापुर के ग्रंथालय से मुझे अपार सामग्री मिली अत: मैं ग्रंथालय विभाग की आभारी हूँ। साथ ही

न्यू कालेज की प्राध्यापिका, चव्हाण मॅडम किल्लेदार मॅडम की आभारी हूँ। संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध कराने में मुझे मौलिक सहयोग प्रदान किया।

साथ ही जिन ज्ञान–अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोधछात्रा,

D.V.Anajekar

स्थान – कोल्हापुर

(कु. दिपाली मधुकर अनाजेकर)

तिथि – 29/05/09